मजिोरम में ब्रू समुदाय को मतदान का अधकिार मलिेगा

चर्चा में क्यों?

गृह मंत्रालय के अनुसार, ब्रू समुदाय से संबंधति 30,000 से अधकि लोग, जो अंतर-समुदाय हसि (Inter-community Violence) के चलते 1997 में मज़िोरम से त्रपिुरा चले गए थे, उन्हें जल्द ही वापस भेज दयिा जाएगा साथ ही उन्हें मतदान का अधकिार दयिा जाएगा। वर्तमान में त्रपिुरा के अस्थायी शवरिों में रहने वाले 5,407 परवारों के वस्थापति लोगों को इस साल 30 सतिंबर से पहले मज़िोरम वापस भेज दयिा जाएगा।

प्रमुख बदिु

- मज़िोरम में इस साल चुनाव होने वाले हैं और चुनाव आयोग ने राज्य से मतदाता-सूची को संशोधति करने और उसमें वस्थापति समुदाय के सदस्यों को शामलि करने के लयि कहा है।
- रींग (reang) जनजातर (मज़िोरम में ब्रू के रूप में जानी जाती है), के 32,876 लोगों को केंद्र, त्रपिुरा और मज़िोरम के बीच त्रपिक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर कयि जाने के बाद मज़िोरम वापस भेज दयिा जाएगा।
- 2014 में मज़िोरम सरकार द्वारा मतदाता सूची के आधार पर इन प्रवासयिों की पहचान की गई थी। इससे पहले, छह प्रत्यावर्तन (repatriation) योजनाओं को अंतमि रूप दयिा गया था और 8,573 लोगों को मज़िोरम वापस भेजा गया था।
- ब्रू की सुरक्षा संबंधी चतिाओं को देखते हुए वर्तमान योजना पर काफी काम कयिा गया है| परवारों को वभिाजति होने से बचाने तथा उस स्थान पर पुनर्वास सुनश्चिति करने के लयि आवश्यक कदम उठाए गए हैं जहाँ से उन्हें वस्थापति होने पर मजबूर होना पड़ा था|
- इस पूरी प्रक्रयिा पर दो साल की अवधमिें केंद्र सरकार के 435 करोड़ रुपए खर्च होंगे|
- त्रपिुरा सरकार के एक बयान के मुताबकि, प्रत्येक वस्थापति परवार को सावधजिमा के रूप में 4 लाख रुपए की वत्तिीय सहायता दी जाएगी।

पृष्ठभूमि

- ब्रू समुदाय, जो मज़िोरम के ममति और कोलासबि ज़लिों में फैला हुआ था, को जनजातयिों और मज़िो के बीच शत्रुता के कारण 1997 में अपने मूल स्थान से भागने के लयि मज़बूर होना पड़ा।
- इन समुदायों के बीच संघर्ष 1995 में तब शुरू हुआ जब राज्य में मज़िो बहुसंख्यक समुदाय का प्रतनिधित्वि करने वाले संगठनों ने मांग की कबि्रू समुदाय को उनके मतदान अधकिारों से वंचति कर दयिा जाए क्योंकवि मज़िोरम के लयि स्वदेशी नहीं थे।
- इससे ब्रू समुदाय के बीच आतंकवादी संगठनों का उदय हुआ, जसिने 1997 में एक मज़िो वन गार्ड को गोली मार दी।
- मज़िो की ओर से हुई इस घटना की हसिक प्रतक्रियिा ने ब्रू को त्रपिुरा भागने के लयि मजबूर कर दयिा जहाँ वे दो दशकों से दयनीय स्थतिमिें शरणार्थी शवरिों में रह रहे थे।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/bru-people-to-get-voting-rights-ministry